जहां दूसरों को समझाना मुश्किल हो, वहां खुद को समझा लेना बेहतर है।
– अज्ञात

अंधेरे में रोशनी की एक किरण

हां, जो पेशंट कोरोना वायरस से लड़कर ठीक हो जाते हैं, उनके खून में ये लंबे समय तक प्रवाहित होती रहती हैं और उनका शरीर बीमारी के वायरस को पहचानकर उससे लड़ने के लिए तैयार रहता है। ऐसे मरीज बाकी बीमारों के लिए भी आशा लेकर आ सकते हैं।

मोहन भट्ट।

कोविड–19 महामारी से कई मोर्चों पर लड़ाई जारी है। इसके इलाज का तरीका खोजना, इसके लिए कोई दवा या वैक्सीन बनाना आज पूरी दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। इसके इलाज को लेकर अंधेरे में रोशनी की एक किरण अभी चिकित्साशास्त्रियों को प्लाज्मा थेरैपी या फिर मलेरिया की एक पुरानी दवा हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन में नजर आई है। केरल देश का वह पहला राज्य हो गया है जो प्लाज्मा थेरैपी पर ट्रायल शुरू करने जा रहा है, हालांकि तुर्की में इस पर पहले से ही काम चल रहा है। इसके तहत कोरोना वायरस के संक्रमण के बाद ठीक हो चुके व्यक्ति से कुछ खून निकाल कर उसका प्लाज्मा बीमार व्यक्ति में इंजेक्ट कर दिया जाता है। देखा गया है कि पेशंट का इम्यून सिस्टम इंजेक्टेड प्लाज्मा में मौजूद ऐंटिबॉडीज की मदद से इनके जैसी और ऐंटिबॉडीज बनाना शुरू कर देता है।

ऐंटिबॉडीज किसी व्यक्ति के शरीर में तब बननी शुरू होती हैं, जब वायरस उस पर अटैक करता है। लेकिन कोविड–19 में वायरस की ग्रोथ इतनी तेज होती है कि हर किसी में उसे परास्त करने लायक ऐंटिबॉडीज नहीं बन पातीं। हां, जो पेशंट कोरोना वायरस से लड़कर ठीक हो जाते हैं, उनके खून में ये लंबे समय तक प्रवाहित होती रहती हैं और उनका शरीर बीमारी के वायरस को पहचानकर उससे लड़ने के लिए तैयार रहता है। ऐसे मरीज बाकी बीमारों के लिए भी आशा लेकर आ सकते हैं।

इसके अलावा कुछ विशेषज्ञों को हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन में काफी संभावनाएं दिख रही हैं। उन्हें उम्मीद है कि कुछ मामलों में यह कोविड–19 के खिलाफ कारगर हो सकती है। ब्राजील के राष्ट्रपति जैर बोल्सोनारो ने तो एक वीडियो में यहां तक दावा कर दिया कि यह हर मरीज पर सही काम कर रही है। हालांकि फेसबुक ने उनकी इस टिप्पणी को गलत जानकारी फैलाने की श्रेणी में लेकर इसे हटा दिया। डॉनल्ड ट्रंप यह दवा भारत से हासिल करने के लिए धमकी की भाषा पर उतर आए। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि हाइड्रॉक्सी क्लोरोक्विन कोरोना के इलाज में कितनी प्रभावी है, इसे लेकर कोई ठोस प्रमाण मौजूद नहीं है।

बहरहाल, पूरी दुनिया में इसकी मांग अचानक बढ़ गई है। अमेरिका ही नहीं, इटली और ब्रिटेन सहित दुनिया के कई देश भारत से यह दवाई जल्दी हासिल करने की उम्मीद में हैं। हमारे यहां मलेरिया का प्रकोप लंबे समय तक रहा और आज भी इसके करीब की कई बीमारियां भारत के लिए बड़ी समस्या बनी हुई हैं। ऐसे में इस दवा का सबसे बड़ा उत्पादक भारत के अलावा और कौन हो सकता था? कोरोना संकट को देखते हुए भारत ने इसके निर्यात पर कुछ समय पहले रोक लगा दी थी लेकिन अब इस दवा को लाइसेंस्ड कैटिगरी में डाल दिया है। यानी देश की अपनी जरूरत पूरी होने के बाद अगर ड्रग का स्टॉक सरप्लस है तो उसे निर्यात किया जा सकता है। बीमारी के इलाज में यह कितनी कारगर होती है, इसका पता इस्तेमाल के बाद ही चलेगा।

संस्कार और चरित्र

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

भारत का मूल संस्कार और चरित्र यही है। अंग्रेजों से स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले हमारे ज्यादातर नेतागण मानते थे कि भारत अन्य देशों की तरह केवल अपने लिए स्वतंत्र नहीं होना चाहता, इसका राष्ट्रीय लक्ष्य विश्व कल्याण है। गांधी जी कहते थे कि स्वतंत्र भारत मानव जाति को संकट मुक्त करने के लिए काम करेगा। आप इतिहास में चले जाइए, एक राष्ट्र के रूप में भारत का व्यवहार हमेशा 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवंतु सुखिनरू' पर आधारित रहा है। नेतृत्व में इस बात को लेकर गहरी समझ न होने के चलते कभी–कभार इस दिशा से थोड़ा–बहुत डिगा जरूर है, लेकिन कभी भी इसने किसी देश या विश्व मानवता के विरुद्ध काम किया हो, इसके उदाहरण नहीं हैं। इसी कारण भारत की एक विशिष्ट छवि फिर से निर्मित हो रही है।

संपादकीय

बदले हालात में

यदि हमारा देश जून–जुलाई तक बीमारी को फतह करने में सफल हो जाता है तो भी इस बात की पूरी संभावना है कि सरकार उसके अगले कुछ माह तक एहतियातन किसी भी तरह की भीड़ जमा नहीं होने देगी। उस स्थिति में बहुत संभव है कि खाली स्टेडियमों में मैच कराकर झोली भरने का इंतजाम किया जाए। अभी पिछले दिनों केविन पीटरसन और संजय मांजरेकर ने आईपीएल को स्टेडियम में बिना दर्शकों के आयोजित करने का सुझाव दिया था। ऐसा नहीं है कि पहले ऐसे मैच नहीं खेले गए हैं। इस साल रणजी ट्रॉफी के फाइनल के आखिरी दिन का खेल स्टेडियम के दरवाजे बंद करके बिना दर्शकों के खेला गया था। इस तरह कुछ अंतरराष्ट्रीय मैच भी खेले गए हैं। लेकिन आईपीएल की रौनक तो स्टेडियम में पहुंचने वाला हुजूम ही है।

भले आईपीएल देखने वालों में बड़ी तादाद मैचों को पिकनिक समझने वालों की है। दर्शकों का उत्साहवर्धन ही क्रिकेटरों को चौके और छक्के लगाने के लिए प्रेरित करता है। यही वजह है कि भारतीय कप्तान विराट कोहली खाली स्टेडियम में मैच कराने के पक्षधर नहीं हैं। उन्होंने कहा है कि खेल के मैदान की असली ताकत उसके प्रशंसकों में होती है। खाली स्टेडियम में खेलने में कोई मजा नहीं है। भारत के पूर्व क्रिकेटर इरफान पठान भी मानते हैं कि मौजूदा समय आईपीएल के बारे में सोचने का नहीं है, क्योंकि इस समय इससे ज्यादा गंभीर मामले सोचने के लिए हैं। वह कहते हैं कि आईपीएल के आयोजन के लिए इंतजार किया जा सकता है। वह मानते हैं कि इस लीग से तमाम लोगों का गुजारा होता है पर मौजूदा हालात की अनदेखी भी नहीं की जा सकती है। वह चाहते हैं कि बीसीसीआई इस बारे में होशियारी के साथ फैसला करे।

कोरोना महामारी के फैलाव को देखते हुए फिलहाल यह कहना कठिन है कि साल के आखिर में भी इसका आयोजन मुमकिन है या नहीं।

बढ़ती अनिश्चितता

मनोज चतुर्वेदी।

खेल जगत आजकल कोरोना वायरस के प्रभाव से दहला हुआ है। टोक्यो ओलिंपिक, फ्रेंच ओपन और विम्बलडन जैसी प्रतियोगिताएं स्थगित या रद्द हो चुकी हैं। आए दिन किसी न किसी प्रतियोगिता के रद्द होने का समाचार आता रहता है, जैसे दिल्ली में होने वाले निशानेबाजी विश्व कप को भी रद्द कर दिया गया है। लेकिन इस माहौल में भी भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड आईपीएल के सत्र के बारे में कोई फैसला करने से बच रहा है। आईपीएल के आयोजक और इसमें भाग लेने वाली फ्रेंचाइजी ही नहीं, कई क्रिकेटर भी चाहते हैं कि किसी तरह साल के आखिर तक इसके आयोजन का कोई तरीका निकाल लिया जाए, भले ही कम समय में आयोजन किया जाए। भारत 2009 में इस लीग का दक्षिण अफ्रीका में कम समय में आयोजन करा चुका है।

गौरतलब है कि बीसीसीआई ने 29 मार्च से शुरू होने वाले आईपीएल के इस सत्र को 15 अप्रैल तक के लिए टाला हुआ है। कोरोना महामारी के फैलाव को देखते हुए फिलहाल यह कहना कठिन है कि साल के आखिर में भी इसका आयोजन मुमकिन है या नहीं। वैसे 18 अक्टूबर से 15 नवंबर तक होने वाले टी–20

विश्व कप के आयोजक अभी इसे निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही आयोजित करने की बात कह रहे हैं। पर पिछले दिनों आए विभिन्न देशों के खिलाड़ियों के बयानों से लगता है कि उन्हें विश्व कप से ज्यादा आईपीएल के आयोजन की चिंता है। इसकी वजह शायद इसका दुनिया की सबसे अमीर क्रिकेट लीग होना है। यह सिर्फ भाग लेने वाले खिलाड़ियों को ही नहीं बल्कि तमाम पूर्व क्रिकेटरों को भी मालामाल बनाती है। कोच, सपोर्ट स्टाफ, कमेंटेटर को भी अपने काम के लिए उम्मीद से ज्यादा रकम मिलती है।

आईपीएल बीसीसीआई की आमदनी का प्रमुख जरिया बन चुकी है। बीसीसीआई को दुनिया का सबसे अमीर क्रिकेट बोर्ड बनाने में इस लीग का अहम योगदान है। इसका अंदाजा आप इससे लगा सकते हैं कि इसका 2018 से 2022 का मीडिया राइट्स करार स्टार स्पोर्ट्स से 16,347 करोड़ रुपये का हुआ है। यही नहीं बीसीसीआई टाइटल प्रायोजक, आधिकारिक पार्टनर्स, अंपायरों के प्रायोजक और स्ट्रेटजिक टाइम आउट प्रायोजकों के माध्यम से भी कमाई करती है। इसी तरह फ्रेंचाइजियां भी, जीतें या हारें पर खूब कमाई करती हैं। इन वजहों से ही इस लीग से जुड़े लोग इसे रद्द करने के पक्ष में नहीं हैं। रिपोर्ट्स बताती हैं कि अगर आईपीएल का यह सीजन रद्द होता है तो बीसीसीआई को लगभग 4000 करोड़ रुपये का नुकसान हो सकता है।

आईपीएल आयोजित कराने के पक्षधर लोगों का मानना है कि कोरोना वायरस की वजह से सुस्त पड़ चुकी क्रिकेट अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाया जा सकता है।

आईपीएल का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट पर कितना दबाव है, इसका अंदाजा इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एंड्रयू स्ट्रास के बयान से लगता है। असल में इंग्लैंड के क्रिकेटर केविन पीटरसन के आईपीएल कराने की बात कहने पर स्ट्रास ने कहा कि आईपीएल में दुनिया भर के खिलाड़ियों को खासी रकम दी जाती है और ईसीबी (इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड) उसका मुकाबला नहीं कर सकता है। ईसीबी जैसी हालत अन्य क्रिकेट बोर्डों की भी है। इसलिए ईसीबी सहित कुछ अन्य बोर्ड चाहते हैं कि आईपीएल को आईसीसी के कैलेंडर में विंडो दे दी जाए।

अष्टयोग-5013

2		3		4		
1	26		41		38	6
7	1		6	5		3
	34	5	33		25	
		2	3	7		1
5	32	6	29		34	4
3				2		7

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5012 का हल

2	1	3	6	4	7	5
1	22	7	34	6	43	6
3	4	1	5	2	6	7
4	30	5	26	1	30	2
6	5	2	3	7	4	1
5	36	6	36	3	29	4
7	1	4	6	5	2	3

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

कोरोना भी अपने प्रजनन में सक्षम नहीं

मोहन। अन्य विषाणुओं की तरह कोरोना भी अपने प्रजनन में सक्षम नहीं है। वह निर्जीव और सजीव के बीच की एक कड़ी है लेकिन जीवित कोशिका के भीतर पहुंचने से इसके जीन सक्रिय होते हैं और होस्ट कोशिका के संसाधनों का इस्तेमाल करके यह अपने जीनोम की प्रतियां बनाता है। जब संक्रमित कोशिका के संसाधन चुकने लगते हैं तो एक–एक कर वायरस जीनोम पैक होने लगते हैं और आखिर में संक्रमित कोशिका को फाड़कर बाहर निकलते हैं। फिर नई कोशिकाओं में यही प्रक्रिया दोहराई जाती है जब तक प्रतिरक्षा तंत्र या इम्यून सिस्टम सक्रिय नहीं होता या कोई दवाई वायरस को नहीं रोकती। फिलहाल कोरोना का मुख्य संक्रमण सबसे ज्यादा फेफड़ों को प्रभावित कर रहा है। यह मुंह, नाक या आंख से प्रवेश करके फेफड़ों तक पहुंचता है। इसीलिए बार–बार हाथ धोने और चेहरा न छूने की हिदायत डॉक्टर दे रहे हैं। लॉकडाउन के दुष्प्रभाव और चुनौतियों का जायजा सरकारी स्तर पर नहीं लेने से पलायन और खौफ का मंजर है।